रात्रि क्लास 17/7/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

रूहानी बच्चे यहाँ समाने बैठै हैं। शरीर के साथ बैठे हैं। जानते तो होंगे यह बेहद का बाप है और स्वर्ग की स्थापना करने आये हैं। स्वर्ग में जावेंगे जरूर परन्तु ऊँच पद तब पावेंगे जबकि तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र तमोप्रधान हैं। झाड़ ही पुराना है। पुरानी चीज़ विनाश होती है ना। तो समझते हो पुरानी दुनिया विनाश होनी ही है। हर 5000 वर्ष बाद पुरानी दुनिया विनाश होती है। इनसे पहले नई दुनिया की स्थापना होती है। पहले हमेशा कहना है नई दुनिया की स्थापना हो रही है; क्योंकि पुरानी का विनाश होना है। अभी तुम बच्चे जानते हो नई दुनिया स्थापन करने वाले के सामने हम बैठे हैं। वह बाप भी शिक्षा देने वाला भी है। गुरु भी है। सत बाप, सत टीचर, सद्गुरु कहा जाता है। अंग्रेजी में सुप्रीम कहा जाता है। सिवाय निराकार बाप के और कोई बाप, टीचर, गुरु हो न सके। बेहद का बाप तो देह में आते नहीं। कहते हैं मैं इनकी वानप्रस्थ अवस्था में प्रवेश करता हूँ। वानप्रस्थ अवस्था में सद्गुरु आ गया तो और सभी को छूट्टी दे दी। सद्गुरु मिला तो भक्तिमार्ग के गुरटों को क्या करेंगे। सद्गुरु है ज्ञान का सागर बाकी सभी हैं भक्ति के सागर। वह अपन को आलमाइटी नहीं कह सकते। शास्त्रों की अथार्टी है। बाप को भी अथार्टी कहा जाता है। बाप कहते हैं मैं इन वेदों–शास्त्रों को नहीं जानते हैं। यह सभी हैं भक्तिमार्ग के। इनको पढ़ने अथवा भक्तिमार्ग के कर्मकाण्डों आदि से, इन शास्त्रों आदि से मेरे को कोई नहीं मिलते। ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र दिखाते हैं; क्योंकि ब्रह्मा हुआ भगवान का बच्चा। भगवान ज्ञान का सागर है। ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों–शास्त्रों आदि का राज़ बताते हैं। तुमने यह शास्त्र आदि बहुत पढ़ी है। मेरे को कोई भी प्राप्त नहीं होते। मैं आता हूँ पवित्र बनाने लिए। पवित्र बनने बिगर आत्मा वापस जा नहीं सकती। बच्चे अच्छी रीत जानते हैं हम पतित–पावन बाप के सामने बैठे हैं। पावन बनने से हम फिर पावन दुनिया में जावेंगे। पावन दुनिया है दो। शान्तिधाम और सुखधाम। दुखधाम में कोई भी पवित्र रह नहीं सकते। फिर उनको पवित्र बनावे कौन। नई दुनिया है निराकारी दुनिया। फिर है निर्विकारी दुनिया। निराकारी से निर्विकारी दुनिया शुरू होता है। फिर निर्विकारी से विकारी बनते हैं। यह तो याद है ना। बाप याद न पड़े अच्छा टीचर को याद करो। यह तो तीनों ही एक ही है। एक शिवबाबा। यहाँ बैठने से तुम बच्चों को बाप और वरसा, सुखधाम और शान्तिधाम याद है। शान्तिधाम–सुखधाम दोनों को याद करते हो। बाकी यह दुखधाम को भूल जाओ। यह पुराना मकान है। 8 वर्ष के अन्दर तुम कर्मातीत अवस्था को पा लेंगे। फिर तुमको आना है अमरलोक में। मृत्युलोक में आना न है। फिर नई दुनिया में ही जावेंगे। जो सबसे पुराना है वह सबसे नया बनेगा। सिर्फ कृष्ण नहीं होगा। प्रजा भी होगी। बदल–सदल कैसे होती है यह तुम आगे चलकर देखेंगे। विनाश होगा फिर भारत में निर्विकारी भी होंगे। जब तक विकारी सभी खलास हो जावेंगे। निर्विकारियों में पहले पहले यह होगा। तुम्हारी राजाई होगी ना। तो तुम्हारे सभी दुख दूर हो जाते हैं। विकारी की बात ही नहीं। योगबल से तुम विश्व को पवित्र बनाते हो। क्या बच्चे पैदा नहीं हो सकते। 5 विकार होते ही नहीं। वहाँ विकार हो कैसे सकता। इसमें बात–चीत कब न करना चाहिए। मोर है विकार की बात ही नहीं। आँसू से बच्चे पैदा होते हैं। इसलिए उनको भारत का नेशनल वर्ड कहा जाता है। एक तो शोभनिक है दूसरा विकार से पैदा नहीं होता है।

खांसी किसको होती है? आत्मा को या शरीर को? (शरीर को होती है आत्मा महसूस करती है) (जीवात्मा को होती है) (आत्मा को होती है शरीर द्वारा) (कोई ने कहा खांसी आत्मा को होती है शरीर को नहीं होती है) दोनों को होती है। जीवात्मा को होती है। आत्मा कहती है मेरे को खांसी हुई। शरीर तब तो कहती है ना। शरीर को दुख होता है तो दवाई की जाती है। गोली खाने से दोनों ही दुख से छूट जावेंगे। फिर आत्मा नहीं कहेगी खांसी है। जीवात्मा को सुख भी होता है तो दुख भी होता है।

दोनों इकट्ठे हैं ना। जीवात्मा दुख भी भोगती है तो सुख भी भोगती है। आत्मा भी तमोप्रधान तो शरीर भी तमोप्रधान है। आत्मा कहती है मेरे को खांसी हुई। यह सभी बातें और सतसंगों आदि में नहीं होते हैं। वहाँ तो शास्त्रों पर ही उन्हों का वातावरण चलता है। यहाँ तो शास्त्र की बात नहीं। वह है भक्ति। भक्ति है तो ज्ञान नहीं। अभी तुम जानते हो हम स्वर्ग के लिए तैयारी कर रहे हैं। इन बातों को और कोई जानते नहीं। समझ भी नहीं सकेंगे। आत्मा तमोप्रधान बनती है तो शरीर भी तमोप्रधान बनती है। आत्मा पढ़ती है शरीर द्वारा। मीठे2 स्वीट चिल्ड्रेन्स प्रति रूहानी एक ही स्वीट बाबा है ना। यह भी कहेंगे स्वीट बाबा। स्वीट बच्चों प्रति बापदादा का दिल व जान सिक व प्रेम से नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाबा का नमस्ते।